Sri Sathya Sai College for Women, Bhopal

(An Autonomous College affiliated to Barkatullah University, Bhopal)

(NAAC Accredited 'A' Grade)

SYLLABUS

PG

SESSION- 2023-24

Class: M.A. Semester-I & II

SUBJECT: Hindi Literature

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबंद्ध स्वशासी महाविद्यालय

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन

स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम

केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित

सत्र – 2023-24

कक्षा	:	एम.ए. प्रथम समसत्र
प्रश्न पत्र	:	प्रथम (अनिवार्य)
विषय	:	हिन्दी साहित्य
प्रश्नपत्र का शीर्षक	:	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य तथा उसका इतिहास
अधिकतम अंक	:	नियमित छात्रों हेतु : 85

Course Objective (पाठ्यक्रम का उद्देश्य)

- भारत के प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य की समृद्ध साहित्यिक परंपरा का ज्ञान करवाना।
- विभिन्न काव्य धाराओं एवं कवियों का अध्ययन।
- सामाजिक उत्थान में मध्यकालीन काव्य की भूमिका का ज्ञान।
- हिन्दी की विभिन्न बोलियों जैसे–सधुक्कड़ी, अवधी, मैथिली आदि का अध्ययन।
- सहज सरल भाषा में अध्यात्म, दर्शन, नीति, सामाजिक व्यवहार एवं मानवीय प्रवृत्तियों के अक्षय भंडार का विहंगम अध्ययन।

विवरण

इकाई 1 व्याख्यांश–

1. विद्यापति – 20 पद (विद्यापति, सं. डॉ. त्रिभुवन नाथ शुक्ल, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
   पद क्रमांक – 1,4,5,7,8,11,12,14,15,16,20,22,23,26,27,28,31,35,36,39,
2. कबीर – कबीर ग्रंथावली – डॉ. श्यामसुन्दर दास
   गुरूदेव को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10) , सुमिरण को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10) , विरह को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10) , ज्ञान विरह को अंग(साखी क्रमांक 1 से 10) परचा को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10) ,
3. जायसी – पदमावत, संपादक – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
   पद :– नागमती वियोग खण्ड

इकाई 2 विद्यापति, कबीर, जायसी एवं उनके काव्य से संबंधित आलोचनात्मक प्रश्न।

इकाई 3 प्राचीनकालीन काव्य का इतिहास प्रमुख प्रवृत्ति एवं रचनाकारों से संबंधित प्रश्न।

इकाई 4 मध्यकालीन काव्य (निर्गुणधारा) का इतिहास, प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं रचनाकारों से संबंधित प्रश्न।

इकाई 5 द्रुतपाठ के कवि – गुरूनानक, दादूदयाल, चन्दबरदाई, अमीर खुसरो, रैदास, नामदेव (कवियों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सामान्य परिचय)।

Learning outcomes (सीखने के परिणाम)

- विद्यार्थियों ने प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य के महत्व को समझा एवं काव्यगत विशेषताओं से परिचित हुए।
- विभिन्न काव्य धाराओं के कवियों का अध्ययन विद्यार्थियों ने किया एवं प्रचुर मात्रा में जानकारी प्राप्त की।
- विद्यार्थियों ने सामाजिक उत्थान में मध्यकालीन काव्य को भूमिका को समझा।
- हिन्दी की विभिन्न बोलियों का ज्ञान विद्यार्थियों को प्राप्त हुआ।
- अत्यंत सहज, सरल भाषा में अध्यात्म, दर्शन, नीति, सामाजिक व्यवहार एवं मानवीय प्रवृत्तियों की जानकारी विद्यार्थियों को प्रदान की गई।

अंक विभाजन

नियमित		
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न	–	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न	–	05x 03 = 15
व्याख्या 03	–	03x 10 = 30
दीर्घउत्तरीय 03 प्रश्न	–	03x 10 = 30
कुल अंक	–	85

संदर्भ ग्रंथ :–

1. विद्यापति – आनन्द प्रकाश दीक्षित
2. विद्यापति – रामनाथ झा
3. विद्यापति पदावली (तीन खण्डों में) बिहार राष्ट्रभाषा परिषद (बिहार)
4. कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. कबीर एक पुनर्मूल्यांकन – संपादक बलदेव वंशी
6. कबीरदास – डॉ. कान्तिकुमार जैन
7. कबीर का ज्ञानोदय – कँवल भारती
8. अकथ कहानी प्रेम की – पुरषोत्तम अग्रवाल
9. दलित मुक्ति की विरासत संत रविदास – डॉ. सुभाषचन्द्र
10. जायसी ग्रन्थावली – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
11. जायसी – रामपूजन तिवारी
12. जायसी – पदमावत– (श्री वासुदेवशरण अग्रवाल)
13. जायसी – विजय देवनारायण साही
14. सूरदास – डॉ. हरवंशलाल शर्मा
15. भक्ति आन्दोलन और सूर का काव्य – मैनेजर पांडेय
16. सूरदास – रामचन्द्र शुक्ल
17. भ्रमर गीत सार – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
18. सूरदास– ब्रजेश्वर शर्मा
19. हिन्दी साहित्य का आदिकाल – डॉ.हजारी प्रसाद द्विवेदी
20. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि – द्वारिका प्रसाद सक्सेना
21. पदमावत का काव्य–वैभव – डॉ. मनमोहन गौतम
22. सूर साहित्य –डॉ.हजारी प्रसाद द्विवेदी
23. मलिक मोहम्मद जायसी और उनका काव्य – डॉ. शिवसहाय पाठक
24. प्राचीन काव्य – (विद्यापति, कबीर, जायसी, युग एवं प्रवृत्तियाँ)डॉ. संजीव जैन
25. अमीर खुसरो – गोपीचन्द नारंग

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबद्ध स्वशासी महाविद्यालय
उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित
सत्र – 2023-24

कक्षा	:	एम.ए. प्रथम समसत्र
प्रश्न पत्र	:	द्वितीय (अनिवार्य)
विषय	:	हिन्दी साहित्य
प्रश्नपत्र का शीर्षक	:	आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास
अधिकतम अंक	:	नियमित छात्रों हेतु : 85

Course Objective (पाठ्यक्रम का उद्देश्य)

- गद्य की विभिन्न विधाओं के अध्ययन द्वारा सर्जनात्मक भाषा, विचारात्मक एवं भावात्मक अभिव्यक्ति क्षमता का विकास।
- स्कंदगुप्त एवं आषाढ़ का एक दिन नाटकों के अध्ययन के आधार से नाटक के तत्वों व रंगमंच के इतिहास का परिचय।
- प्रेमचंद की कालजयी रचना 'गोदान' के अध्ययन के माध्यम से उपन्यास के तत्वों एवं ग्रामीण जीवन का परिचय।
- द्रुत पाठ द्वारा विभिन्न गद्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय।

विवरण

इकाई 1	व्याख्यांश– 1. स्कन्दगुप्त–जयशंकर प्रसाद 2- आषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश। 3- गोदान – प्रेमचन्द
इकाई 2	स्कन्दगुप्त –आषाढ़ का एक दिन एवं गोदान से समीक्षात्मक प्रश्न।
इकाई 3	हिन्दी नाटक एवं रंगमंच का इतिहास, विविध प्रवृत्तियाँ और रचनाकारों पर निबंधात्मक प्रश्न।
इकाई 4	हिन्दी उपन्यास का इतिहास, विविध प्रवृत्तियाँ और रचनाकारों पर निबंधात्मक प्रश्न।
इकाई 5	द्रुतपाठ –निम्नांकित गद्यकारों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय– 1. नाटककार– भारतेन्दु हरिश्चन्द्र डॉ. रामकुमार वर्मा, धर्मवीर भारती। 2. उपन्यासकार – अमृतलाल नागर, निर्मल वर्मा, मन्नू भण्डारी।

Learning outcomes (सीखने के परिणाम)

- गद्य की विभिन्न विधाओं एवं उनकी विशेषताओं से परिचित हुए।
- छात्रों ने स्कंदगुप्त नाटक के माध्यम से सत्ता संघर्ष व राष्ट्रीय महत्व को समझा एवं स्कंदगुप्त की चारित्रिक विशेषताओं से परिचित हुए।
- गोदान के अध्ययन से छात्रों ने सामाजिक विद्रूपताओ,अन्याय अत्याचार, शोषण तथा किसानों की स्थिति से परिचित हुए।
- द्रुत पाठ के विभिन्न गद्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को पढ़कर छात्रों ने यह सीखा कि उत्तम चरित्र ही जीवन को सही दिशा प्रदान करता है।

अंक विभाजन

नियमित		
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न	–	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न	–	05x 03 = 15
व्याख्या 03	–	03x 10 = 30
दीर्घउत्तरीय 03 प्रश्न	–	03x 10 = 30
कुल अंक	–	85

संदर्भ ग्रंथ :–

1. उपन्यास के विरूद्ध उपन्यास–परमानन्द श्रीवास्तव
2. प्रसाद के नाटक–सिद्धनाथ कुमार
3. बींसवीं शताब्दी का हिन्दी साहित्य – विजय मोहन सिंह
4. प्रेमचन्दः जीवन, कला और कृतित्व – हंसराज रहबर
5. गोदान : इन्द्रनाथ मदान
6. जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता – डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय
7. अपने–अपने प्रेमचन्द– डॉ. पी. एन. सिंह
8. गोदान : नया परिप्रेक्ष्य – डॉ. गोपाल राय
9. हिन्दी उपन्यास का इतिहास –डॉ. गोपाल राय
10. हिन्दी कथा साहित्य : एक दृष्टि – डॉ. सत्यकेतु सांकृत
11. हिन्दी साहित्य का इतिहास –आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
12. हिन्दी साहित्य का इतिहास : हिन्दी वाङ्मय 20वीं शती –डॉ. नगेन्द्र
13. हिन्दी साहित्य का इतिहास : युग और प्रवृत्तियाँ–शिवकुमार वर्मा
14. हिन्दी का गद्य इतिहास –रामचन्द्र तिवारी
15. हिन्दी उपन्यास का इतिहास –डॉ. गोपाल राय
16. उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द– शिवनारायण श्रीवास्तव, प्रकाश विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली।
17. उपन्यासकार प्रेमचन्द – डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त – अशोक प्रकाशन दिल्ली।
18. गोदान : मूल्यांक और मूल्यांकन इन्द्रनाथ मदान, नीलम प्रकाशन।
19. प्रेमचन्द : कलम का सिपाही – अमृतराय, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद
20. मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक – नेमिचन्द्र जैन

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबंद्ध स्वशासी महाविद्यालय
उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित
सत्र – 2023-24

कक्षा	:	एम.ए. प्रथम समसत्र
प्रश्न पत्र	:	तृतीय (अनिवार्य)
विषय	:	हिन्दी साहित्य
प्रश्नपत्र का शीर्षक	:	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र
अधिकतम अंक	:	(नियमित छात्रों हेतु) : 85

Course Objective (पाठ्यक्रम का उद्देश्य)

- संस्कृत से हिन्दी तक निरंतर प्रवाहमान भारतीय काव्य शास्त्र की परंपरा से विद्यार्थियों को अवगत कराना।
- काव्य रचना से रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि, औचित्य सिद्धान्तों के महत्व से परिचित करवाना।
- आलोचनात्मक प्रवृति का विकास, जिससे विद्यार्थियों में किसी भी रचना के सर्वांगीण अध्ययन की क्षमता विकसित हो सके।

विवरण

इकाई 1 भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा – संस्कृत एवं हिन्दी, संस्कृत काव्य शास्त्रः काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य – प्रयोजन काव्य के प्रकार।
रस – सिद्धांतः रस का स्वरूप, रस–निष्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण।

इकाई 2 अलंकार सिद्धांतः मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण। रीति–सिद्धांत : रीति की अवधारणा एवं स्थापना, काव्य–गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।

इकाई 3 वक्रोक्ति सिद्धांत : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद । ध्वनि–सिद्धांत : ध्वनि कास्वरूप, ध्वनि – सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत–व्यंग्य, चित्रकाव्य।

इकाई 4 औचित्य–सिद्धांत : प्रमुख स्थापनाएँ एवं औचित्य के भेद, हिन्दी कवि – आचार्यों का काव्य शास्त्रीय चिंतन।
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. नामवर सिंह, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, डॉ. विजयबहादुर सिंह।

इकाई 5 हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ : शास्त्रीय व्यक्तिवादी / सौष्ठव वादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, मनोविश्लेषणवादी, सौंदर्यशास्त्रीय शैलीवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय।
समन्वयवादी, सौष्ठववादी।

Learning outcomes (सीखने के परिणाम)

- विद्यार्थियों ने भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा का ज्ञान प्राप्त किया।
- रस सिद्धांत का अध्ययन कर विद्यार्थियों ने काव्य में रस के महत्व को जाना कि रस, काव्य की आत्मा है। इस के बिना काव्य सृजन संभव नहीं।
- अलंकार सिद्धांत के अध्ययन से विद्यार्थियों ने जाना कि जैसे एक प्राणवान शरीर को आभूषण सुन्दर बना देते हैं, उसी प्रकार रसयुक्त काव्य अलंकारों के प्रयोग से और अधिक रूचिकर तथा अर्थवान हो जाता है।
- रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि, औचित्य सिद्धान्तों के काव्य सृजन के महत्व से जाना कि इनके उपयोग से काव्य–रचना भाषा एवं अर्थ की दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध हो उठती है।
- हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियों का अध्ययन कर विद्यार्थियों में समीक्षात्मक कौशल का विकास हुआ।

अंक विभाजन

नियमित		
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न	–	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न	–	05x 03 = 15
दीर्घउत्तरीय 05 प्रश्न	–	05x 12 = 60
कुल अंक	–	85

संदर्भ ग्रंथ :–

1. काव्यशास्त्र –आचार्य भगीरथ प्रसाद मिश्र
2. भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य परंपरा–राधा वल्लभ त्रिपाठी
3. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन–डॉ. सत्यदेव चौधरी एवं शान्ति स्वरूप गुप्त
4. भारतीय काव्यशास्त्र– डॉ. उमेश सिंह
5. आधुनिक हिन्दी आलोचना– संदर्भ एवं दृष्टि – डॉ. रामचन्द्र तिवारी
6. आलोचक का दायित्व –डॉ. रामचन्द्र तिवारी
7. दूसरी परन्परा की खोज –डॉ. नामवर सिंह
8. भारतीय काव्यशास्त्र– डॉ. उषा शुक्ला
9. पाश्चात्य काव्यशास्त्र–डॉ. उमेश सिंह
10. पाश्चात्य काव्यशास्त्र–डॉ. विजय बहादुर सिंह
11. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत – डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत
12. भारतीय काव्यशास्त्र– डॉ. उदयभानु सिंह
13. भारतीय साहित्य शास्त्र– डॉ. बलदेव उपाध्याय
14. हिन्दी साहित्य में विविध वाद– डॉ. प्रेमनारायणशुक्ल
15. उत्तर आधुनिकता, सुरचनावाद – डॉ. गोपीचन्द नारंग
16. उत्तर आधुनिकता साहित्य विमर्श –डॉ. सुधीश पचैरी
17. हिन्दी आलोचना की बीसवीं सदी – डॉ. निर्मला जैन
18. नये साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र – गजानन माधव मुक्तिबोध
19. भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज – आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबंद्ध स्वशासी महाविद्यालय
उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित
सत्र – 2023-24

कक्षा	:	एम.ए. प्रथम समसत्र
प्रश्न पत्र	:	चतुर्थ (अनिवार्य)
विषय	:	हिन्दी साहित्य
प्रश्नपत्र का शीर्षक	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी
अधिकतम अंक	:	(नियमित छात्रों हेतु) : 85

Course Objective (पाठ्यक्रम का उद्देश्य)

- कामकाजी हिन्दी के विभिन्न रूपों का ज्ञान
- कार्यालयीन हिन्दी के प्रकार्यों का अभ्यास
- पारिभाषिक शब्दावली के महत्व एवं प्रयोग का ज्ञान
- हिन्दी कम्प्यूटिंग का अध्ययन एवं अभ्यास
- हिन्दी पत्रकारिता के विभिन्न स्वरूपों का अध्ययन एवं अभ्यास

विवरण

इकाई 1 कामकाजी हिन्दी–

1. हिन्दी के विभिन्न रूप – सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा।
2. कार्यालयीन हिन्दी, राज भाषा के प्रमुख प्रकार्य। प्रारूपण, पत्र–लेखन संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पणी।

इकाई 2 पारिभाषिक शब्दावली – स्वरूप एवं महत्व, पारिभाषिक शब्दावली के उदाहरण एवं उनका व्यावहारिक प्रयोग।

इकाई 3 हिन्दी कम्प्यूटिंग–

1. कम्प्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा वेव पब्लिशिंग का परिचय।
2. इंटरनेट, संपर्क उपकरणों का परिचय, प्राथमिक रख–रखाव एवं इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र।
3. वेब पब्लिकेशन।
4. इंटरनेट एक्सप्लोरर अथवा नेट स्केप।
5. लिंक, ब्राउजिंग पोर्टल, ई. मेल भेजना / प्राप्त करना, हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट प्वाइंट, डाउनलोडिंग एवं अपलोडिंग की साफ्टवेयर, पैकेज।

इकाई 4

1. पत्रकारिता अवधारणा, स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार।
2. हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास।
3. समाचार लेखन–कला।
4. संपादन के आधारभूत तत्व।
5. व्यावहारिका प्रूफ शोधन।

इकाई 5

1. पत्रकारिता : शीर्षक की संरचना, लीड, इण्ट्रों एवं शीर्षक संपादन।
2. संपादकीय लेखन
   1. पृष्ठसज्जा
   2. साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता एवं प्रेस प्रबंधन।
   3. प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार – संहिता।

Learning outcomes (सीखने के परिणाम)

- हिन्दी के रोजगारोन्मुख स्वरूप का अध्ययन कर रचनात्मक लेखन, दूरदर्शन, आकाशवाणी एवं विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी कार्यालयों,संस्थानों में हिन्दी के बहुआयामी प्रयोग का ज्ञान।
- कार्यालयीन हिन्दी के अर्न्तगत विद्यार्थियों में प्रारूपण, पत्र लेखन की क्षमता विकसित हुई।
- पारिभाषिक शब्दावली के महत्व एवं व्यावहारिक प्रयोग और वर्तमान विकासशील समय में भाषा को समृद्ध बनाने में उसकी उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त किया।
- हिन्दी भाषा में कम्प्यूटर टाइपिंग, हिन्दी के प्रमुख वेबसाइट, इंटरनेट, बेब पब्लिशिंग आदि का अध्ययन कर कम्प्यूटर पर कार्य करने की क्षमता विकसित हुई।
- पत्रकारिता के संक्षिप्त इतिहास को जाना तथा संपादकीय लेखन के विविध आयामों का ज्ञान प्राप्त किया।

अंक विभाजन

नियमित		
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न	–	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न	–	05x 03 = 15
दीर्घउत्तरीय 05 प्रश्न	–	05x 12 = 60
कुल अंक	–	85

संदर्भ ग्रंथ :–

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी –रामछबीला त्रिपाठी
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी (भाग 1–2) – डॉ. संजीव जैन
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी –पृथ्वीराज पांडेय
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी –कमलकुमार बोस
5. प्रयोजनमूलक हिन्दी और आधुनिक पत्रकारिता – डॉ. मुश्ताक अली
6. प्रयोजनमूलक हिन्दी –कैलाशचन्द्र भाटिया
7. हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम– वेद प्रताप वैदिक
8. अनुवाद संवेदना और सरोकार – डॉ. सुरेश सिंघल
9. अनुवाद क्या है – सं. डॉ. राजमल बोरा
10. अनुवाद विज्ञान –डॉ. भोलानाथ तिवारी
11. अनुवाद सिद्वान्त –डॉ. जी. गोपीनायन्
12. मीडिया लेखन – सुमित मोहन
13. कम्प्यूटर यानि मशीनी दिमाग – शुकदेव प्रसाद
14. कम्प्यूटर से बातचीत – ओम विकास
15. कम्प्यूटर एक परिचय – संतोष चौबे

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबद्ध स्वशासी महाविद्यालय
उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित
सत्र–2023-24

कक्षा	:	एम.ए. द्वितीय समसत्र
प्रश्न पत्र	:	प्रथम (अनिवार्य)
विषय	:	हिन्दी साहित्य
प्रश्नपत्र का शीर्षक	:	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य तथा उसका इतिहास
अधिकतम अंक	:	नियमित छात्रों हेतु :85

Course Objective (पाठ्यक्रम का उद्देश्य)

- भारत के प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य की समृद्ध साहित्यिक परंपरा का ज्ञान करवाना।
- विभिन्न काव्य धाराओं एवं कवियों का अध्ययन।
- सामाजिक उत्थान में मध्यकालीन काव्य की भूमिका का ज्ञान।
- हिन्दी की विभिन्न बोलियों जैसे– ब्रज, अवधी, आदि का अध्ययन।
- सहज सरल भाषा में अध्यात्म, दर्शन, नीति, सामाजिक व्यवहार एवं मानवीय प्रवृत्तियों के अक्षय भंडार का विहंगम अध्ययन।

विवरण

इकाई 1 व्याख्यांश–

1. सूरदास–भ्रमरगीत सार संपादक रामचंद्र शुक्ल, पद क्रमांक 51 से 100 ।
2. तुलसीदास–रामचरितमानस अयोध्याकाण्ड, दोहा, क्रमांक 51 से 100 ।
3. बिहारी–बिहारी रत्नाकर संपादक जगन्नाथ रत्नाकर, दोहा, क्रमांक 1 से 50 ।

इकाई 2 सूरदास, तुलसीदास, बिहारी एवं उनके काव्य से संबंधित समीक्षात्मक प्रश्न।

इकाई 3 भक्तिकाल (सगुण भक्ति धारा) का इतिहास, प्रवृत्तियों और प्रमुख रचनाकारों से संबंधित निबंधात्मक प्रश्न।

इकाई 4 रीतिकाल का इतिहास, प्रवृत्तियाँ और प्रमुख रचनाकारों से संबंधित प्रश्न।

इकाई 5 द्रुतपाठ के कवि –रसखान, मीराबाई,घनानंद, केशव और मतिराम से संबंधित प्रश्न। (व्यक्तित्व एवं कृतित्व सामान्य परिचय)।

Learning outcomes (सीखने के परिणाम)

- विद्यार्थियों ने प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य के महत्व को समझा एवं काव्यगत विशेषताओं से परिचित हुए।
- विभिन्न काव्य धाराओं के कवियों का अध्ययन विद्यार्थियों ने किया एवं प्रचुर मात्रा में जानकारी प्राप्त की।
- विद्यार्थियों ने सामाजिक उत्थान में मध्यकालीन काव्य को भूमिका को समझा।
- हिन्दी की विभिन्न बोलियों का ज्ञान विद्यार्थियों को प्राप्त हुआ।
- अत्यंत सहज, सरल भाषा में अध्यात्म, दर्शन, नीति, सामाजिक व्यवहार एवं मानवीय प्रवृत्तियों की जानकारी विद्यार्थियों को प्रदान की गई।

नोट :– वस्तुनिष्ठ प्रश्न – सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से
लघु उत्तरीय प्रश्न –द्रुतपाठ से

अंक विभाजन

नियमित		
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न	–	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न	–	05 x 03 = 15
दीर्घउत्तरीय व्याख्यात्मक 03	–	03 x 10 = 30
दीर्घउत्तरीय समीक्षात्मक 03	–	03 x 10 = 30
कुल अंक	–	85

संदर्भ ग्रंथ :–

1. गोस्वामी तुलसीदास– रामचन्द्र शुक्ल
2. लोकवादी तुलसीदास–डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी
3. भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य–मैनेजर पाण्डेय
4. तुलसी–सं. उदयभान सिंह
5. तुलसी काव्य मीमांसा –डॉ. उदयभान सिंह
6. तुलसी–माता प्रसाद गुप्त
7. तुलसी नव मूल्यांकन –डॉ. रामरतन भटनागर
8. बिहारी – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
9. बिहारी रत्नाकर – रत्नाकर
10. घ्नानन्द कवित्त – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
11. घ्नानन्द चयनिका – डॉ. कृष्णाचन्द्र वर्मा
12. केश्व कौमुदी – लाला भगवान दीन (भाग 1 एवं 2)
13. केशव की काव्यकला – पं.कृष्णशंकर शुक्ल
14. केशव का आचार्यत्व – डॉ. विजयपाल सिंह
15. केशव की काव्य चेतना – डॉ. विजयपाल सिंह
16. हिन्दी साहित्य का इतिहास –रामचन्द्र शुक्ल
17. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
18. हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास (16 खण्डों में)– का.ना.प्र.सभा वाराणसी

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबद्ध स्वशासी महाविद्यालय
उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित
सत्र–2023-24

कक्षा	:	एम.ए. द्वितीय समसत्र
प्रश्न पत्र	:	द्वितीय (अनिवार्य)
विषय	:	हिन्दी साहित्य
प्रश्नपत्र का शीर्षक	:	आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास
अधिकतम अंक	:	नियमित छात्रों हेतु : 85

Course Objective (पाठ्यक्रम का उद्देश्य)

- गद्य की विभिन्न विधाओं के अध्ययन द्वारा सर्जनात्मक भाषा, विचारात्मक एवं भावात्मक अभिव्यक्ति क्षमता का विकास।
- कहानियों के अध्ययन के आधार पर कहानी के तत्वों व इतिहास का परिचय।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी की कालजयी रचना 'पुनर्नवा' के अध्ययन के माध्यम से उपन्यास के तत्वों का परिचय।
- द्रुत पाठ द्वारा विभिन्न गद्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय।

विवरण

इकाई 1 व्याख्यांश–

1. पुनर्नवा (उपन्यास)–हजारी प्रसाद द्विवेदी ।
2. निबंध –
   1. देश सेवा का महत्व – बालकृष्ण भट्ट।
   2. म्युनिसिपेलिटी के कारनामे – महावीर प्रसाद द्विवेदी
   3. क्रोध – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
   4. अशोक के फूल – हजारी प्रसाद द्विवेदी
   5. मेरे राम का मुकुट भीग रहा है – विद्यानिवास मिश्र
   6. प्रिया नीलकंठी – कुबेरनाथ राय
   7. पगडण्डियों का जमाना – हरिशंकर परसाई
3. निर्धारित कहानियाँ–
   1. उसने कहा था – चन्द्रधर शर्मागुलेरी
   2. पूस की रात – प्रेमचंद
   3. ताई – विश्वम्भरनाथ कौशिक
   4. अपना अपना भाग्य – जैनेन्द्र कुमार
   5. परिन्दे – निर्मल वर्मा
   6. राजा निरबंसिया – कमलेश्वर
   7. ऐ लड़की – कृष्णा सोबती
   8. पथ के साथी – महादेवी वर्मा

इकाई 2 पुनर्नवा (उपन्यास),निर्धारित निबंध, कहानी एवं पथ के साथी से समीक्षात्मक प्रश्न।

इकाई 3 हिन्दी कहानी एवं निबंध का इतिहास, प्रवृत्तियों और प्रमुख रचनाकारों से संबधित प्रश्न।

इकाई 4 हिन्दी गद्य की अन्य विधाएँ – रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, यात्रावृतांत, व्यंग्य आदि का इतिहास, प्रमुख प्रवृत्तियाँ और प्रमुख रचनाकारों से संबद्ध निबन्धात्मक प्रश्न।

इकाई 5 द्रुत हेतु निर्धारित प्रमुख गद्यकार – यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु, भीष्म साहनी, हरिवंशराय बच्चन, राहुल सांकृत्यायन, अमृतलाल बेगड़।

Learning outcomes (सीखने के परिणाम)

- गद्य की विभिन्न विधाओं एवं उनकी विशेषताओं से परिचित हुए।
- छात्रों ने कहानियों के माध्यम से सत्ता एवं सामाजिक संघर्ष व राष्ट्रीय महत्व को समझा एवं पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं से परिचित हुए।
- पुनर्नवा के अध्ययन से छात्र ऐतिहासिक उपन्यास की विशेषताओं से परिचित हुए।
- द्रुत पाठ के विभिन्न गद्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को पढ़कर छात्रों ने यह सीखा कि उत्तम चरित्र ही जीवन को सही दिशा प्रदान करता है।

नोट :– वस्तुनिष्ठ प्रश्न – सम्पूर्ण पाठ्यक्रम सेलघु उत्तरीय प्रश्न –द्रुतपाठ से

अंक विभाजन

नियमित	
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न –	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न –	05 x 03 = 15
दीर्घउत्तरीय व्याख्यात्मक 03 –	03 x 10 = 30
दीर्घउत्तरीय समीक्षात्मक 03 –	03 x 10 = 30
कुल अंक –	85

संदर्भ ग्रंथ :–

1. उपन्यास के विरूद्ध उपन्यास – परमानन्द श्रीवास्तव
2. प्रसाद के नाटक – सिद्धनाथ कुमार
3. बींसवीं शताब्दी का हिन्दी साहित्य –विजयमोहन सिंह
4. प्रेमचंद : जीवन, कला और कृतित्व –हंसराज रहबर
5. गोदान –इन्द्रनाथ मदान
6. जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता – डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय
7. अपने–अपने प्रेमचन्द – डॉ. पी. एन. सिंह
8. गोदान : नया परिप्रेक्ष्य – डॉ. गोपाल राय
9. हिन्दी उपन्यास का इतिहास – डॉ. गोपाल राय
10. हिन्दी कथा साहित्य : एक दृष्टि – डॉ. सत्यकेतु सांकृत
11. हिन्दी साहित्य का इतिहास –आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
12. हिन्दी साहित्य का इतिहास : हिन्दी वाङ्मय 20वीं शती – डॉ. नगेन्द्र
13. हिन्दी साहित्य का इतिहास : युग और प्रवृत्तियाँ–शिवकुमार वर्मा
14. हिन्दी का गद्य इतिहास –रामचन्द्र तिवारी
15. हिन्दी उपन्यास का इतिहास – डॉ. गोपाल राय
16. उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द – शिवनारायण श्रीवास्तव, प्रकाश विभाग,सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली।
17. उपन्यासकार प्रेमचन्द – डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त – अशोक प्रकाशन दिल्ली।
18. गोदान : मूल्यांक और मूल्यांकन इन्द्रनाथ मदान, नीलम प्रकाशन।
19. प्रेमचन्द : कलम का सिपाही – अमृतराय, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद
20. मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक – नेमिचन्द्र जैन

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबंद्ध स्वशासी महाविद्यालय
उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित
सत्र–2023-24

कक्षा	:	एम.ए. द्वितीय समसत्र
प्रश्न पत्र	:	तृतीय (अनिवार्य)
विषय	:	हिन्दी साहित्य
प्रश्नपत्र का शीर्षक	:	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र
अधिकतम अंक	:	नियमित छात्रों हेतु : 85

Course Objective (पाठ्यकम का उद्देश्य)

- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र की परंपरा से विद्यार्थियों को अवगत कराना।
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र के विभिन्न सिद्धान्तों के महत्व से छात्रों परिचित करवाना।
- आलोचनात्मक प्रवृति का विकास, जिससे विद्यार्थियों में किसी भी रचना के सर्वगींण अध्ययन की क्षमता विकसित हो सके।

विवरण

इकाई 1

प्लेटो : काव्य– सिद्धांत
अरस्तू : अनुकरण – सिद्धांत, त्रासदी, विरेचन सिद्धांत
लोंजाइनस : उदात्त की अवधारणा

इकाई 2

ड्राइडन के काव्य सिद्धांत
वड्र्सवर्थ : काव्य– भाषा का सिद्धांत
कालरिज : कल्पना – सिद्धांत और काव्य

इकाई 3

मैथ्यू आर्नल्ड : आलोचना का स्वरूप और प्रकार
टी.एस. इलियट : परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ समीकरण, संवेदनशीलता का असाहचर्य।

इकाई 4

आई.एस. रिचर्ड्स : रागात्मक अर्थ। संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना।
मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववाद।

इकाई 5

आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ ।

सिद्धांत और वाद : अभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद्, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, संरचनावाद, शैलीविज्ञान, विखंडनवाद, उत्तर आधुनिकतावाद

Learning outcomes (सीखने के परिणाम)

- विद्यार्थियों ने पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा का ज्ञान प्राप्त किया।
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र के विभिन्न सिद्धांतों जैसे– अरस्तू का अनुकरण सिद्धांत, लोंजाइनस का उदात्त की अवधारणा आदि सिद्धांतों का अध्ययन कर छात्र काव्य के महत्व से परिचित ह
- हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियों का अध्ययन कर विद्यार्थियों में समीक्षात्मक कौशल का विकास हुआ।

अंक विभाजन

नियमित		
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न	–	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न	–	05 x 03 = 15
दीर्घउत्तरीय 05 –		05 x 12 = 60
कुल अंक	–	85

संदर्भ ग्रंथ :–

1. काव्यशास्त्र –आचार्य भगीरथ प्रसाद मिश्र
2. भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य परंपरा–राधा वल्लभ त्रिपाठी
3. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन–डॉ. सत्यदेव चौधरी
4. भारतीय काव्यशास्त्र– डॉ. उमेश सिंह
5. आधुनिक हिन्दी आलोचना– संदर्भ एवं दृष्टि – डॉ. रामचन्द्र तिवारी
6. आलोचक का दायित्व –डॉ. रामचन्द्र तिवारी
7. दूसरी परन्परा की खोज –डॉ. नामवर सिंह
8. भारतीय काव्यशास्त्र– डॉ. उषा शुक्ला
9. पाश्चात्य काव्यशास्त्र–डॉ. उमेश सिंह
10. पाश्चात्य काव्यशास्त्र–डॉ. विजय बहादुर सिंह
11. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत – डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत
12. भारतीय काव्यशास्त्र– डॉ. उदयभानु सिंह
13. भारतीय साहित्य शास्त्र– डॉ. बलदेव उपाध्याय
14. हिन्दी साहित्य में विविध वाद– डॉ. प्रेमनारायणशुक्ल
15. उत्तर आधुनिकता, सुरचनावाद – डॉ. गोपीचन्द नारंग
16. उत्तर आधुनिकता साहित्य विमर्श –डॉ. सुधीश पचैरी
17. हिन्दी आलोचना की बीसवीं सदी – डॉ. निर्मला जैन
18. नये साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र – गजानन माधव मुक्तिबोध
19. भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज – आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबंद्ध स्वशासी महाविद्यालय
उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित
सत्र–2023-24

कक्षा	:	एम.ए. द्वितीय समसत्र
प्रश्न पत्र	:	चतुर्थ (अनिवार्य)
विषय	:	हिन्दी साहित्य
प्रश्नपत्र का शीर्षक	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी
अधिकतम अंक	:	(नियमित छात्रों हेतु) : 85

Course Objective (पाठ्यकम का उद्देश्य)

- कामकाजी हिन्दी के विभिन्न रूपों का ज्ञान
- कार्यालयीन हिन्दी के प्रकार्यों का अभ्यास
- दृश्य श्रृव्य माध्यम के महत्व एवं प्रयोग का ज्ञान
- हिन्दी कम्प्यूटिंग का अध्ययन एवं अभ्यास
- अनुवाद के विभिन्न स्वरूपों का अध्ययन एवं अभ्यास

विवरण

इकाई 1 मीडिया लेखन

1. जनसंचार – प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियाँ
2. विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप – मुद्रण, श्रव्य, दृश्य, इंटरनेट।
3. श्रव्य माध्यम – रेडियो
4. मौखिक भाषा की प्रकृति, समाचार लेखन एवं वाचन, रेडियो नाटक, उद्घोषणा लेखन, विज्ञापन लेखन, फीचर तथा रिपोर्ताज,

इकाई 2

1. दृश्य–श्रृव्य माध्यम (फिल्म, टेलीविजन, वीडियो,) दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति, दृश्य एवं श्रव्य साम्रगी का सामंजस्य, पार्श्व वाचन, (वायस ओवर) पटकथा लेखन, टेलीड्रामा, डॉक्यूड्रामा, संवाद–लेखन, साहित्य की विधाओं का दृश्य–माध्यमों में रूपान्तरण, विज्ञापन की भाषा।
2. इंटरनेट सामग्री सृजन –(Content creation)

इकाई 3

1. अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि।
2. हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका।
3. कार्यालयीन हिन्दी और अनुवाद।
4. जनसंचार माध्यमों का अनुवाद।
5. विज्ञापन में अनुवाद।
6. वैचारिक साहित्य का अनुवाद।

इकाई4

1. वाणिज्यिक अनुवाद।
2. वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अनुवाद।
3. विधि–साहित्य की हिन्दी और अनुवाद।
4. व्यावहारिक अनुवाद अभ्यास।
5. कार्यालयीन अनुवाद :– कार्यालयीन एवं प्रशासनिक शब्दावली, प्रशासनिक प्रयुक्तियाँ, पदनाम, विभाग आदि।

6. पत्रों के अनुवाद।
7. पदनामों, अनुभागों, दस्तावेजों, प्रतिवेदनों के अनुवाद।

इकाई 5

1. बैंक साहित्य के अनुवाद का अभ्यास।
2. विधि साहित्य के अनुवाद का अभ्यास।
3. साहित्यिक अनुवाद के सिद्धांत एवं व्यवहारः कविता, कहानी, नाटक, सारानुवाद।
4. दुभाषिया प्रविधि।
5. अनुवाद पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन।

Learning outcomes (सीखने के परिणाम)

- हिन्दी के रोजगारोन्मुख स्वरूप का अध्ययन कर रचनात्मक लेखन, दूरदर्शन, आकाशवाणी एवं विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी कार्यालयों,संस्थानों में हिन्दी के बहुआयामी प्रयोग का
- अनुवाद के महत्व एवं व्यावहारिक प्रयोग और वर्तमान विकासशील समय में भाषा को समृद्ध बनाने में उसकी उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त किया।
- हिन्दी भाषा में कम्प्यूटर टाइपिंग, हिन्दी के प्रमुख वेबसाइट, इंटरनेट, बेब पब्लिशिंग आदि का अध्ययन कर कम्प्यूटर पर कार्य करने की क्षमता विकसित हुई।
- अनुवाद के संक्षिप्त इतिहास को जाना तथा संपादकीय लेखन के विविध आयामों का ज्ञान प्राप्त किया।

अंक विभाजन

		नियमित
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न	–	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न	–	05 x 03 = 15
दीर्घउत्तरीय 05 –		05 x 12 = 60
कुल अंक	–	85

संदर्भ ग्रंथ :–

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – रामछबीला त्रिपाठी
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी (भाग 1–2) – डॉ. संजीव जैन
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी –पृथ्वीराज पांडेय
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी –कमलकुमार बोस
5. प्रयोजनमूलक हिन्दी और आधुनिक पत्रकारिता – डॉ. मुश्ताक अली
6. प्रयोजनमूलक हिन्दी –कैलाशचन्द्र भाटिया
7. हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम – वेद प्रताप वैदिक
8. अनुवाद संवेदना और सरोकार – डॉ. सुरेश सिंघल
9. अनुवाद क्या है – सं. डॉ. राजमल बोरा
10. अनुवाद विज्ञान –डॉ. भोलानाथ तिवारी
11. अनुवाद सिद्वान्त –डॉ. जी. गोपीनायन्
12. मीडिया लेखन – सुमित मोहन
13. कम्प्यूटर यानि मशीनी दिमाग – शुकदेव प्रसाद
14. कम्प्यूटर से बातचीत – ओम विकास
15. कम्प्यूटर एक परिचय – संतोष चैबे
16. भारतीय मीडिया : अंतरंग पहचान – सम्पादक डॉ. स्मिता मिश्र

Sri Sathya Sai College for Women, Bhopal

(An Autonomous College affiliated to Barkatullah University, Bhopal)

(NAAC Accredited 'A' Grade)

SYLLABUS

PG

SESSION- 2023-24

Class: M.A. Semester-III & IV

SUBJECT: Hindi Literature

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबंद्ध स्वशासी महाविद्यालय
उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित
सत्र–2023-24

कक्षा	:	एम.ए. तृतीय समसत्र
प्रश्न पत्र	:	प्रथम (अनिवार्य)
विषय	:	हिन्दी साहित्य
प्रश्न पत्र का शीर्षक	:	आधुनिक हिन्दी काव्य तथा उसका इतिहास
अधिकतम अंक	:	नियमित छात्रों हेतु : 85

Course Objective (पाठ्यकम का उद्देश्य)

- आधुनिक हिन्दी काव्य के अर्न्तगत निर्धारित कवियों मैथिलीशरण गुप्त व जयशंकर प्रसाद के काव्य एवं काव्यगत विशेषताओं से विद्यार्थियों को परिचित कराना। व्याख्यात्मक लेखन द्वारा सृजनात्मक क्षमता का विकास करना।
- जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन कर समीक्षात्मक लेखन हेतु प्रेरित करना।
- आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं उसके कृतिकारों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।
- अध्यात्म, दर्शन, नीति ,सामाजिक व्यवहार एवं मानवीय प्रवृत्तियों का विहंगम अध्ययन।
- द्रुत पाठ के कवि एवं उनकी काव्यगत विशेषताओं का वर्णन।

विवरण

इकाई 1	व्याख्यांश	
	1. मैथिलीशरण गुप्त	: साकेत का नवम सर्ग
	2. जयशंकर प्रसाद	: कामायनी, चिंता, श्रद्धा, आनन्द सर्ग
इकाई 2	मैथिलीशरण गुप्त एवं उनके काव्य से संबंधित समीक्षात्मक प्रश्न।	
इकाई 3	जयशंकर प्रसाद एवं उनके काव्य से संबंधित समीक्षात्मक प्रश्न।	
इकाई 4	आधुनिक हिन्दी काव्य (छायावाद तक) की प्रमुख प्रवृत्तियाँ,	
इकाई 5	द्रुतपाठ के निर्धारित कवि जगन्नाथ दास रत्नाकर ,महादेवी वर्मा और सुभद्रा कुमारी चौहान।	

Learning out comes (सीखने के परिणाम)

- विद्यार्थियों ने आधुनिक काव्य के महत्व को समझा एवं काव्यगत विशेषताओं से परिचित हुए।
- समीक्षात्मक लेखन से परिचित हुए।
- आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं उनके कृतिकारों से अवगत हुए।
- अध्यात्म, दर्शन, नीति, सामाजिक व्यवहार एवं मानवीय प्रवृत्तियों की शिक्षा प्राप्त की।
- द्रुत पाठ के कवि एवं उनके काव्य से परिचित हुए।

अंकविभाजन

नियमित	
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न–	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न–	05 x 03 = 15
दीर्घउत्तरीय व्याख्यात्मक 03 –	03 x 10 = 30
दीर्घउत्तरीय समीक्षात्मक 03 –	03 x 10 = 30
कुलअंक–	85

संदर्भग्रंथ :–

1. जयशंकरप्रसाद–नन्द किशोर वाजपेयी
2. छायावाद–नामवर सिंह
3. कविता के आरपार–नन्दकिशोर नवल
4. कामायनी सौन्दर्य–डॉ. फतह सिंह
5. कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ–डॉ. नगेन्द्र
6. कामायनी : एक पुनर्विचार–मुक्तिबोध
7. जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता–प्रभाकर श्रोत्रिय
8. महीयसी महादेवी–गंगाप्रसाद पांडे
9. महादेवी–परमानन्द श्रीवास्तव
10. एक भारतीय आत्मा–विक्रम दत्त श्रीधर
11. सुमित्रानन्दन पन्त–डॉ. नगेन्द्र
12. निराला–रामविलास शर्मा
13. निराला की साहित्य साधना–राम विलास शर्मा
14. अज्ञेय : सृजन और संघर्ष–रामकमल राय
15. मुक्ति बोध : एक अवधूत कविता–नरेश मेहता
16. नयी कविता : नयी दृष्टि–रामकमल सिंह
17. नागार्जुन संवाद–विजय बहादुर सिंह
18. कवि अज्ञेय –नन्दकिशोर नवल
19. नई कविता की भूमिका–डॉ. प्रेमशंकर
20. हरिवंशराय बच्चन–(सं.) अजित कुमार
21. सुमित्रानन्दन पन्त–रचना संसार–कुमार विमल
22. निराला की तीन लंबी कविताएँ –(राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति, कुकुरमुत्ता)–डॉ. गयाप्रसाद शुक्ल

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबंद्ध स्वशासी महाविद्यालय
उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित
सत्र–2023-24

कक्षा	:	एम.ए. तृतीय समसत्र
प्रश्न पत्र	:	द्वितीय (अनिवार्य)
विषय	:	हिन्दी साहित्य
प्रश्न पत्र का शीर्षक	:	भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा
अधिकतम अंक	:	नियमित छात्रों हेतु : 85

Course Objective (पाठ्यकम का उद्देश्य)

- भाषा एक विज्ञान है। भाषा को समझने का वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना जिसके अर्न्तगत परिभाषा, लक्षण, संरचना, स्वरूप अध्ययन की दिशाएं आदि सम्मिलित हैं।
- स्वन प्रक्रिया के अर्न्तगत वागयंत्र की संरचना और कार्य के अध्ययन का बोध करवाना।
- शब्द और अर्थ के संबंध का अध्ययन।
- साहित्य और भाषा विज्ञान के संबंध का अध्ययन।
- रूप विज्ञान के अन्तर्गत लिंग, वचन, कारक, काल, क्रिया आदि रूप विज्ञान द्वारा व्याकरणिक कोटियों के अध्ययन द्वारा जानना कि भाषा कैसे निश्चयात्मक रूप धारण करती है।

विवरण

इकाई 1 भाषा और भाषा विज्ञान – भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा व्यवस्था और भाषा का व्यवहार, भाषा संरचना और भाषिक प्रकार्य, भाषा विज्ञान स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ– भाषा विज्ञान एवं अन्य शास्त्र, अध्ययन की पद्धति, वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।

इकाई 2 स्वन प्रक्रिया–स्वरूप और शाखाएँ, स्वनिम का संक्षिप्त इतिहास, वागयंत्र और उनके कार्य, स्वनिम की अवधारणा–स्वनों का वर्गीकरण, स्वन गुण, स्वनिम– परिवर्तन।

इकाई 3 व्याकरण– रूप विज्ञान का स्वरूप, रूपिक की अवधारणा, रूप परिवर्तन की दिशाएं, रूप परिवर्तन के कारण।

वाक्य की अवधारणा–वाक्य के अनिवार्य तत्व, वाक्य के भेद, वाक्य विश्लेषण, निकटस्थ अव्यव विश्लेषण, गहन संरचना और बाह्य संरचना।

इकाई 4 अर्थ विज्ञान – अर्थ की अवधारणा। शब्द और अर्थ का सम्बन्ध। अर्थ प्राप्ति के साधन और अर्थ परिवर्तन की दिशाएं, अर्थ परिवर्तन के कारण।

इकाई 5 साहित्य और भाषा विज्ञान –साहित्य के अध्ययन में भाषा विज्ञान के अंगों की उपयोगिता।

Learning out comes (सीखने के परिणाम)

- विद्यार्थियों ने जाना कि भाषा किसे कहते हैं और उसका निर्माण कैसे होता है।
- स्वन प्रक्रिया वागयंत्र की संरचना को जाना कि किस वर्ण का उच्चारण किस स्थान से होता है।
- रूप विज्ञान के अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों ने भाषायी अभिव्यक्ति की लघुत्तम इकाई को जाना।
- शब्द और अर्थ के संबंध द्वारा विद्यार्थियों ने जाना कि सार्थक शब्द या वाक्य ही भाषा है विद्यार्थियों ने अर्थ परिवर्तन के कारणों को भी जाना।
- भाषा विज्ञान का अध्ययन साहित्य लेखन एवं शोध को गंभीर एवं प्रखर बनाता है।

अंकविभाजन

नियमित	
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न–	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न–	05 x 03 = 15
दीर्घउत्तरीय 05 –	05 x 12 = 60
कुल अंक–	85

संदर्भग्रंथ :–

1. भाषा विज्ञान–भोलानाथ तिवारी
2. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा–डॉ. रामविलास शर्मा
3. सामान्य भाषा विज्ञान–सक्सेना बाबूराम
4. भाषा विज्ञान की भूमिका–आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा / दीप्ति शर्मा
5. हिन्दी ध्वनि और उनका उच्चारण–भोलानाथ तिवारी
6. ध्वनि सिद्धान्त तथा तुलनीय साहित्य चिन्तन–डॉ. बच्चूलाल अवस्थी
7. आधुनिक विज्ञान की भूमिका–डॉ. मोतीलाल गुप्त एवं डॉ. रधुवीर प्रसाद भटनागर
8. भाषा विज्ञान–डॉ. राजेश श्रीवास्तव

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबंद्ध स्वशासी महाविद्यालय
उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित
सत्र–2023-24

कक्षा	:	एम.ए. तृतीय समसत्र
प्रश्न पत्र	:	तृतीय (अनिवार्य)
विषय	:	हिन्दी साहित्य
प्रश्न पत्र का शीर्षक	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास
अधिकतम अंक	:	नियमित छात्रों हेतु : 85

Course Objective (पाठ्यकम का उद्देश्य)

- हिन्दी साहित्य के इतिहास की परम्परा और साहित्येतिहास के पुर्नलेखन की समस्याओं का ज्ञान करवाना।
- विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य का महत्व बताना । गद्य साहित्य की प्रवृत्तियों से परिचित करवाना तथा गद्य साहित्य की विभिन्न काव्य धाराओं के प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाओं का ज्ञान करवाना।
- हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल के महत्व को बताना। पूर्व मध्यकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित करवाना। सांस्कृतिक चेतना, भक्ति आंदोलन, काव्य धाराएँ, निर्गुण सन्त कवि एवं सूफी कवियों के अवदान का भावबोध करवाना।
- राम और कृष्ण काव्य का अध्ययन कर विद्यार्थी प्रमुख कवियों और उनके रचनागत वैशिष्टय की जानकारी प्राप्त करेंगे।
- विद्यार्थी उत्तर मध्यकाल रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल सीमा और नामकरण की विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे।
- विद्यार्थी रीतिकालीन साहित्य से अवगत होंगे तथा प्रमुख प्रवृत्तियाँ, विविध काव्यधाराएँ–रीति बद्ध, रीति सिद्ध, रीतिमुक्त आदि के बारे में विस्तारपूर्वक समझेंगे।

विवरण

इकाई 1	हिन्दी साहित्य के इतिहास की परम्परा और साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ।
इकाई 2	हिन्दी साहित्य के आदिकाल की पृष्ठभूमि,आदिकाल के साहित्य का वर्गीकरण, साहित्य की प्रवृत्तियाँ, काव्य धाराएँ, गद्य साहित्य, प्रतिनिधि रचनाकार और इनकी रचनाएँ।
इकाई 3	पूर्व मध्यकाल भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक चेतना एवं भक्ति आन्दोलन, विभिन्न काव्य धाराएं तथा उनका विश्लेषण, प्रमुख निर्गुण सन्त कवि और सूफी कवियों का अवदान।
इकाई 4	श्राम और कृष्ण काव्य : प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्टय।
इकाई 5	उत्तर मध्यकाल रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल सीमा और नामकरण, विविध धाराएँ–रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त, प्रवृत्तियाँ औरविशेषताएं।

Learning out comes (सीखने के परिणाम)

- विद्यार्थियों ने हिन्दी साहित्य के इतिहास एवं उसकी परंपरा के बारे में जानकारी प्राप्त की।
- हिन्दी साहित्य के महत्व से विद्यार्थी परिचित हुए एवं साहित्य की काव्यधाराएँ विभिन्न प्रवृत्तियों, गद्य साहित्य के विभिन्न प्रतिनिधि कवि और उनकी रचनाओं के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी प्राप्त की।
- हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल के महत्व को समझा। पूर्व मध्यकाल की ऐतिहासिक, पृष्ठभूमि से परिचित हुए। सांस्कृतिक चेतना, भक्ति अंदोलन, विभिन्न काव्यधाराएँ निर्गुण संत सूफी कवियों के साहित्यिक अवदान को विद्यार्थियों ने समझा।
- विद्यार्थियों ने राम और कृष्ण काव्य को समझा। प्रमुख कवियों एवं उनके रचनागत वैशिष्टय से परिचित हुए।
- उत्तर मध्यकाल रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि काल सीमा और नामकरण की जानकारी विद्यार्थियों ने प्राप्त की।
- विद्यार्थी रीतिकालीन साहित्य से अवगत हुए। विविध काव्य धाराओं एवं उनसे संबंधित कवियों के बारे में जानकारी प्राप्त की।

अंकविभाजन

नियमित	
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न–	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न–	05 x 03 = 15
दीर्घउत्तरीय 05 –	05 x 12 = 60
कुल अंक–	85

संदर्भग्रंथ :–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास–रामचन्द्र शुक्ल
2. (1)हिन्दी साहित्य की भूमिका, (2)हिन्दी साहित्य का आदिकाल, (3)हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास,–हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास–डॉ. रामकुमार वर्मा
4. हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास (16 खण्डों में)–का.ना.प्र.सभा.वाराणसी
5. हिन्दी साहित्य क इतिहास : हिन्दी वाङ्मय 20वीं शती–डॉ. नगेन्द्र
6. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास–रामस्वरूप चतुर्वेदी
7. बीसवीं शताब्दी का हिन्दी साहित्य–विजय मोहन सिंह

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबद्ध स्वशासी महाविद्यालय
उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित
सत्र–2023-24

कक्षा	:	एम.ए. तृतीय समसत्र
प्रश्न पत्र	:	चतुर्थ (वैकल्पिक)
विषय	:	हिन्दीसाहित्य
प्रश्नपत्र का शीर्षक	:	~~तुलसीदास~~ / सूरदास / ~~अनुवादविज्ञान~~ / ~~कथाकार प्रेमचन्द~~ / ~~जयशंकरप्रसाद~~ / ~~दृश्य–श्रव्य माध्यमलेखन~~
अधिकतम अंक	:	नियमित छात्रों हेतु : 85

Course Objective (पाठ्यकम का उद्देश्य)

- छात्र भक्तिकालीन कवि सूरदास के जीवन वृत्त, अंतःसाक्ष्य बाह्य साक्ष्य एवं उनकी काव्यगत विशेषताओं को जानेंगे।
- विद्यार्थी सूरदास की प्रमुख रचना 'सूरसागर' के महत्व एवं उनके निर्धारित पदो के भावार्थ एवं उसमें निहित संदेश से परिचित होंगे।
- प्रारम्भ से मथुरागमन तक के पदो के व्याख्यांश का ज्ञान एवं भाव विस्तार की जानकारी विद्यार्थी प्राप्त करेंगे।
- निर्धारित पदों का अध्ययन कर विद्यार्थी आलोचनात्मक प्रश्नावली से परिचित होंगे। गुण दोषों के अवलोकन की क्षमता व आलोचनात्मक कौशल का विकास होगा। तुलनात्मक प्रवृत्ति विकसित होगी।
- विद्यार्थी तत्कालीन युगीन पृष्ठभूमि, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- द्रुत पाठ के अध्ययन द्वारा निर्धारित कवियों के काव्य वैशिष्ट्य से परिचित होंगे।

विवरण

इकाई	1	प्रारम्भ से मथुरा गमन के पूर्वतक के पदों से व्याख्याएँ पूछी जावेगी। सूरसागर– सं. – धीरेन्द्र वर्मा
इकाई	2	निर्धारित पद (प्रारम्भ से मथुरा गमन के पूर्व तक) आलोचनात्मक प्रश्न
इकाई	3	युगीन पृष्ठभूमि सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, परिस्थितियाँ।
इकाई	4	सूरदास का जीवनवृत्त, अंतः साक्ष्य, बाह्य साक्ष्य।
इकाई	5	द्रुतपाठ–कुम्भनदास, कृष्णदास, परमानन्ददास, नन्दास।

Learning out comes (सीखने के परिणाम)

- विद्यार्थी भक्तिकालीन कवि सूरदास के जीवन वृत्त एवं उनके काव्य वैशिष्ट्य से परिचित हुए। वाहय एवं अंतःसाक्ष्य की जानकारी प्राप्त की।
- सूरसागर जैसे महान ग्रंथ के बारे में विद्यार्थियों ने जाना एवं उसके महत्व को समझा। पदों के भावार्थ से परिचित हुए।
- निर्धारित पदो के व्याख्यांश समझे एवं भाव विस्तार करने की समझ विकसित हुई।
- विद्यार्थियों ने आलोचनात्मक प्रश्नों को समझा एवं उनके लेखन की जानकारी प्राप्त की। बौद्धिक क्षमता एवं समीक्षात्मक शैली विकसित हुई।
- विद्यार्थी तत्कालीन युगीन पृष्ठभूमि सामाजिक सांस्कृतिक राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के बारे में जाना।
- द्रुत पाठ के अध्ययन द्वारा विद्यार्थी निर्धारित कवियों के काव्य वैशिष्टय से परिचित हुए।

अंकविभाजन

नियमित	
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न–	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न–	05 x 03 = 15
दीर्घ उत्तरीय व्याख्यात्मक 02–	02 x 12 = 24
दीर्घ उत्तरीय समीक्षात्मक 03–	03 x 12 = 36
कुल अंक–	85

संदर्भग्रंथ :–

1. सूरदास–डॉ. हरवंश लाल शर्मा
2. सूरदास–ब्रजेश्वर शर्मा
3. सूर और तुलसी–आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी
4. भक्ति आंदोलन और सूर का काव्य –मैनेजर पाण्डेय
5. सूरसाहित्य –हजारी प्रसाद द्विवेदी
6. भ्रमरगीत सार–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबंद्ध स्वशासी महाविद्यालय
उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित
सत्र–2023-24

कक्षा	:	एम.ए. चतुर्थ समसत्र
प्रश्न पत्र	:	प्रथम (अनिवार्य)
विषय	:	हिन्दी साहित्य
प्रश्नपत्र का शीर्षक	:	आधुनिक हिन्दी काव्य और उसका इतिहास
अधिकतम अंक	:	नियमित छात्रों हेतु : 85

Course Objective (पाठ्यकम का उद्देश्य)

- आधुनिक हिन्दी काव्य के अर्न्तगत निर्धारित कवियों के काव्य एवं काव्यगत विशेषताओं से विद्यार्थियों को परिचित कराना। व्याख्यात्मक लेखन द्वारा सृजनात्मक क्षमता का विकास करना।
- सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला,सुमित्रानन्दन पन्तके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन कर समीक्षात्मक लेखन हेतु प्रेरित करना।
- आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं उसके कृतिकारों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।
- अध्यात्म, दर्शन, नीति ,सामाजिक व्यवहार एवं मानवीय प्रवृत्तियों का विहंगम अध्ययन।
- द्रुत पाठ के कवि एवं उनकी काव्यगत विशेषताओं का वर्णन।

विवरण

इकाई 1 पाठ्य विषय
1. सुमित्रानन्दन पन्त – परिवर्तन, नौका विहार ।
2. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला : राम की शक्ति पूजा, कुकुरमुत्ता।
3. सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेयः नदी के द्वीप, असाध्य वीणा।
4. गजानन माधव मुक्ति बोध– भूल–गलती, अंधेरे में ।

नोट –सुमित्रानन्दन पन्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, अज्ञेय एवं गजानन माधव मुक्ति बोध की कविताओं से व्याख्यांश।

इकाई 2 आधुनिक हिन्दी काव्य (छायावाद तक) की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इतिहास एवं प्रमुख कवि।

इकाई 3 छायावादोत्तर काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इतिहास और प्रमुख कवि।

इकाई 4 निर्धारित कवियों एवं उनके काव्य पर समीक्षात्मक प्रश्न।

इकाई 5 द्रुत पाठ– रामधारी सिंह दिनकर, हरिवंशराय बच्चन, भवानी प्रसाद मिश्र, नरेश मेहता (व्यक्तित्व एवं कृतित्व सामान्य परिचय)से लघुत्तरीय प्रश्न।

Learning out comes (सीखने के परिणाम)

- विद्यार्थियों ने आधुनिक काव्य के महत्व को समझा एवं काव्यगत विशेषताओं से परिचित हुए।
- समीक्षात्मक लेखन से परिचित हुए।
- आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं उनके कृतिकारों से अवगत हुए।
- अध्यात्म, दर्शन, नीति, सामाजिक व्यवहार एवं मानवीय प्रवृत्तियों की शिक्षा प्राप्त की।
- द्रुत पाठ के कवि एवं उनके काव्य से परिचित हुए।

अंक विभाजन

नियमित		
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न	–	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न	–	05 x 03 = 15
व्याख्या 03	–	03 x 10 = 30
दीर्घउत्तरीय 03	–	03 x 10 = 30
कुल अंक	–	85

संदर्भ ग्रंथ :

1. जयशंकर प्रसाद –नन्दकिशोर वाजपेयी
2. छायावाद –नामवर सिंह
3. कामायनी सौन्दर्य –डॉ. फतह सिंह
4. कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ– डॉ. नागेन्द्र
5. कामायनी : एक पुनर्विचार –मुक्तिबोध
6. जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता–प्रभाकर श्रोत्रिय
7. महीयसी महादेवी – गंगा प्रसाद पांडे
8. महादेवी –परमानन्द श्रीवास्तव
9. एक भारतीय आत्मा –विक्रम दत्त श्रीधर
10. सुमित्रानन्दन पन्त –डॉ. नागेन्द्र
11. निराला आत्महंता आस्था–दूधनाथ सिंह
12. निराला–रामविलास शर्मा
13. निरालाकी साहित्य साधना –रामविलास शर्मा
14. निरालाकी काव्य भाषा –रेखा खरे
15. अज्ञेय : सृजन और संघर्ष – रामकमल राय
16. सन्नाटे का छंद – आनंद कुमार सिंह
17. मुक्तिबोध : एक अवधूत कविता –नरेश मेहता
18. शब्द पुरूष अज्ञेय – नरेश मेहता
19. कविता के प्रस्थान – सुधीर रंजन सिंह
20. नयी कविता : नयी दृष्टि – रामकमल सिंह
21. लोकप्रिय कविता की कसौटियाँ –विजयबहादुर सिंह
22. दिनकर : अर्धनारीश्वर कवि –नन्दकिशोर नवल
23. उर्वशी : उपलब्ध और सीमा – विजेन्द्र नारायण सिंह
24. कविता के तीन एकांत – अशोक वाजपेयी
25. टिगरिया का लोक देवता – प्रेमशंकर रघुवंशी
26. नागार्जुन संवाद – विजयबहादुर सिंह
27. कवि अज्ञेय – नन्द किशोर नवल
28. अज्ञेय : वागर्थ का वैभव –रमेशचन्द्र शाह
29. अज्ञेय : आलीकी का आत्मदान – कृष्णदत्त पालीवाल
30. नई कविता की भूमिका – डॉ. प्रेमशंकर
31. नई कविता और अस्तित्वाद –रामविलास शर्मा
32. हरिवंशराय बच्चन – (सं.) अजित कुमार
33. एक शमशेर भी है – (सं.)दूधनाथ सिंह
34. सुमित्रानन्दन पन्त – रचना संसार – कुमार विमल
35. निराला की तीन लंबी कविताएँ – (राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति, कुकुरमुत्ता) –डॉ. गया प्रसाद शुक्ल

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबंद्ध स्वशासी महाविद्यालय
उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित
सत्र–2023-24

कक्षा	:	एम.ए. चतुर्थ समसत्र
प्रश्न पत्र	:	द्वितीय (अनिवार्य)
विषय	:	हिन्दी साहित्य
प्रश्नपत्र का शीर्षक	:	भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा
अधिकतम अंक	:	नियमित छात्रों हेतु : 85

Course Objective (पाठ्यक्रम का उद्देश्य)

- भाषा एक विज्ञान है। भाषा को समझने का वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना जिसके अर्न्तगत परिभाषा, लक्षण, संरचना, स्वरूप अध्ययन की दिशाएं आदि सम्मिलित हैं।
- हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत प्राचीन एवं मध्यकालीन आर्य भाषाओं का अध्ययन ।
- हिन्दी के भौगोलिक विस्तार के अंतर्गत हिन्दी की उपभाषाओं का अध्ययन ।
- हिन्दी के भाषिक स्वरुप के अंतर्गत स्वनिम का अध्ययन ।
- हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था के अन्तर्गत लिंग, वचन, कारक, काल, क्रिया आदि रूप विज्ञान द्वारा व्याकरणिक कोटियों के अध्ययन द्वारा जानना कि भाषा कैसे निश्चयात्मक रूप धारण करती है।
- हिन्दी के विविध रूपों के अंतर्गत संचार भाषा,राष्ट्रभाषा एवं कम्प्यूटर सुविधाओं का अध्ययन ।

विवरण

इकाई 1 हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि–प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ– पालि, प्राकृत –शौरसेनी, अर्द्धमागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ और उनका वर्गीकरण।

इकाई 2 हिन्दी का भौगोलिक विस्तार– हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियॉं। खड़ी बोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।

इकाई 3 हिन्दी का भाषिक स्वरूप : हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था – खंड्य, खंडेतर। हिन्दी शब्द रचना, उपसर्ग, प्रत्यय, समास। रूप–रचना, लिंग, वचन और कारक। हिन्दी की संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया रूप। हिन्दी वाक्य रचना, पदक्रम और अन्विति।

इकाई 4 हिन्दी के विविध रूप : सम्पर्क – भाषा, माध्यम–भाषा, संचार–भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी। हिन्दी की संवैधानिक स्थिति।

इकाई 5 हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएँः आंकड़ा–संसाधन और शब्द संसाधन, वर्तनी–शोधक मशीनी अनुवाद, हिन्दी भाषा – शिक्षण, देवनागरी लिपि –विशेषताएं और मानकीकरण।

अंक विभाजन

नियमित		
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न	–	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न	–	05 x 03 = 15
दीर्घउत्तरीय 05	–	05 x 12 = 60
कुल अंक	–	85

Learning out comes (सीखने के परिणाम)

- विद्यार्थियों ने हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन कर आर्य भाषाओं का परिचय प्राप्त किया ।
- हिन्दी के भौगोलिक विस्तार का अध्ययन कर हिन्दी की उपभाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया ।
- स्वनिम के अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों ने भाषायी अभिव्यक्ति की लघुत्तम इकाई को जाना।
- आधुनिक युग में संचार भाषा , राजभाषा एवं कम्प्यूटर सुविधा के अध्ययन द्वारा हिन्दी के बढ़ते वर्चस्व का ज्ञान प्राप्त किया ।
- विद्यार्थियों ने जाना कि भाषा विज्ञान का अध्ययन साहित्य लेखन एवं शोध को गंभीर एवं प्रखर बनाता है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. भाषा विज्ञान –भोलानाथ तिवारी
2. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा –डॉ. रामविलास शर्मा
3. सामान्यभाषा विज्ञान –सक्सेना बाबूराम
4. भाषा विज्ञान की भूमिका –आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा / दीप्ति शर्मा
5. हिन्दी ध्वनि और उनका उच्चारण–भोलानाथ तिवारी
6. ध्वनि सिद्धान्त तथा तुलनीय साहित्य चिन्तन –डॉ. बच्चूलाल अवस्थी
7. आधुनिक विज्ञान की भूमिका –डॉ. मोतीलाल गुप्त एवं डॉ. रघुवीर प्रसाद भटनागर
8. भाषा विज्ञान – डॉ. राजेश श्रीवास्तव

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबंद्ध स्वशासी महाविद्यालय
उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित
सत्र–2023-24

कक्षा	:	एम.ए. चतुर्थ समसत्र
प्रश्न पत्र	:	तृतीय (अनिवार्य)
विषय	:	हिन्दी साहित्य
प्रश्नपत्र का शीर्षक	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास
अधिकतम अंक	:	(नियमित छात्रों हेतु) : 85

Course Objective (पाठ्यकम का उद्देश्य)

- आधुनिक काल के अंर्तगत हिन्दी साहित्य की विभिन्न परिस्थियों एवं साहित्यिक विशेषताओं का अध्ययन।
- विद्यार्थियों को द्विवेदी युग की प्रवृत्तियों से परिचित करवाना तथा छायावाद के प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाओं का ज्ञान करवाना।
- हिन्दी साहित्य की उत्तरछायावादी प्रवृत्तियों का अध्ययन ।
- हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं का अध्ययन ।

विवरण

इकाई 1 आधुनिक काल : आधुनिक काल की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सन् 1857 ई. का प्रथम स्वाधीनता संग्राम और पुनर्जागरण। भारतेन्दु युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।

इकाई 2 द्विवेदी युग : प्रमुख साहित्यकार रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ। हिन्दी स्वच्छन्दतावादी चेतना का अग्रिम विकास, छायावादी काव्य, प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और विशेषताएँ।

इकाई 3 उत्तरछायावाद की विविध प्रवृतियाँ : प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता। प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।

इकाई 4 हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाएँ : कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि।

इकाई 5 संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा का विकास। हिन्दी आलोचना का उद्भव एवं विकास। स्त्री विमर्श और दलित विमर्श का परिचय।

अंक विभाजन

नियमित		
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न	–	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न	–	05 x 03 = 15
दीर्घउत्तरीय 05 प्रश्न–		05 x 12 = 60
कुल अंक	–	85

Learning out comes (सीखने के परिणाम)

- विद्यार्थियों ने हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल की विभिन्न परिस्थितियों के बारे में जानकारी प्राप्त की।
- विद्यार्थी द्विवेदी युग एवं छायावाद की प्रवृत्तियों एवं रचनाकारों से परिचित हुए ।
- उत्तर छायावादी प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त किया ।
- विद्यार्थियों ने हिन्दी साहित्य की विभिन्न गद्य विधाओं का परिचय प्राप्त किया ।
- उत्तर मध्यकाल रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि काल सीमा और नामकरण की जानकारी विद्यार्थियों ने प्राप्त की।
- विद्यार्थी रीतिकालीन साहित्य से अवगत हुए। विविध काव्य धाराओं एवं उनसे संबंधित कवियों के बारे में जानकारी प्राप्त की।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास –रामचन्द्र शुक्ल
2. (1)हिन्दी साहित्य की भूमिका,(2)हिन्दी साहित्य का आदिकाल,(3)हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास,–हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास–डॉ. राम कुमार वर्मा
4. हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास (16 खण्डों में)–का.ना.प्र.सभा.वाराणसी
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास : हिन्दी वाङ्मय 20वीं शती – डॉ. नगेन्द्र
6. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास–रामस्वरूप चतुर्वेदी
7. बीसवीं शताब्दी का हिन्दी साहित्य – विजयमोहन सिंह

श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबंद्ध स्वशासी महाविद्यालय
उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये समसत्र पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम
केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित
सत्र–2023-24

कक्षा	:	एम.ए. चतुर्थ समसत्र
प्रश्न पत्र	:	चतुर्थ (वैकल्पिक)
विषय	:	हिन्दी साहित्य
प्रश्नपत्र का शीर्षक	:	~~तुलसीदास~~ / सूरदास / ~~अनुवाद विज्ञान / कथाकार प्रेमचन्द / जयशंकर प्रसाद / दृश्य–श्रव्य माध्यम लेखन~~
अधिकतम अंक	:	(नियमित छात्रों हेतु) : 85

Course Objective (पाठ्यक्रम का उद्देश्य)

- छात्र भक्तिकालीन कवि सूरदास के जीवन वृत्त, अंतःसाक्ष्य बाह्य साक्ष्य एवं उनकी काव्यगत विशेषताओं को जानेंगे।
- विद्यार्थी सूरदास की प्रमुख रचना 'सूरसागर' के महत्व एवं उनके निर्धारित पदों के भावार्थ एवं उसमें निहित संदेश से परिचित होंगे।
- मथुरागमन के पदो के व्याख्यांश का ज्ञान एवं भाव विस्तार की जानकारी विद्यार्थी प्राप्त करेंगे।
- निर्धारित पदों का अध्ययन कर विद्यार्थी आलोचनात्मक प्रश्नावली से परिचित होंगे। गुण दोषों के अवलोकन की क्षमता व आलोचनात्मक कौशल का विकास होगा। तुलनात्मक प्रवृत्ति विकसित होगी।
- विद्यार्थी तत्कालीन युगीन पृष्ठभूमि, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- द्रुत पाठ के अध्ययन द्वारा निर्धारित कवियों के काव्य वैशिष्ट्य से परिचित होंगे।

विवरण

इकाई 1	मथुरागमन से अंत तक की व्याख्याएँ। सूरसागर सार संपादक – डॉ. धीरेन्द्र वर्मा
इकाई 2	भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं विविध काव्य धाराएँ ।
इकाई 3	कृष्णभक्ति काव्यधारा का परिचय एवं प्रवृत्तियाँ एवं अष्टछाप के कवि।
इकाई 4	सूरदास एवं उनके काव्य पर आलोचनात्मक प्रश्न।
इकाई 5	लघुउत्तरीय प्रश्न–चतुर्भुजदास, नन्ददास, रसखान, मीरा।

अंक विभाजन

नियमित	
वस्तुनिष्ठ 10 प्रश्न –	10 x 01 = 10
लघुउत्तरीय 05 प्रश्न –	05 x 03 = 15
दीर्घउत्तरीय 05 प्रश्न–	05 x 12 = 60
कुल अंक –	85

Learning out comes (सीखने के परिणाम)

- विद्यार्थी भक्तिकालीन कवि सूरदास के जीवन वृत्त एवं उनके काव्य वैशिष्ट्य से परिचित हुए।
- सूरसागर जैसे महान ग्रंथ के बारे में विद्यार्थियों ने जाना एवं उसके महत्व को समझा। पदों के भावार्थ से परिचित हुए।
- विद्यार्थियों ने निर्धारित पदों के व्याख्यांश को समझा एवं उनमें भाव विस्तार करने की समझ विकसित हुई।
- विद्यार्थियों ने आलोचनात्मक प्रश्नों को समझा एवं उनके लेखन की जानकारी प्राप्त की। बौद्धिक क्षमता एवं समीक्षात्मक शैली विकसित हुई।
- विद्यार्थी तत्कालीन युगीन पृष्ठभूमि सामाजिक सांस्कृतिक राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के बारे में जाना।
- द्रुत पाठ के अध्ययन द्वारा विद्यार्थी निर्धारित कवियों के काव्य वैशिष्टय से परिचित हुए।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. सूरदास – डॉ. हरवंशलाल शर्मा
2. सूरदास– ब्रजेश्वर शर्मा
3. सूर और तुलसी –आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी
4. भक्ति आंदोलन और सूर का काव्य –मैनेजर पाण्डेय
5. सूर साहित्य – हजारी पगसाद द्विवेदी
6. भ्रमर गीत सार – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास –आचार्य रामचन्द्र शुक्ल